श्रीगंगानगर जिले में कार्यरत शिक्षित महिलाओं की अपने कार्य के प्रति संतुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ.वन्दना दुआ (शोध निर्देशिक)
जसदीप कौर (शोधार्थी)

सारांश :-

प्रस्तुत शोधकार्य में श्रीगंगानगर जिले में कार्यरत शिक्षित महिलाओं की अपने कार्य के प्रति संतुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इस हेतु शिक्षण तथा अन्य व्यवसायों में कार्यरत ७०० महिलाओं को न्यादर्श के रूप में चुना गया अध्ययन में प्राप्त आंकडों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। इस हेतु डॉ. अमर सिंह तथा डॉ. टी. आर. शर्मा द्वारा निर्मित कार्यसंतुष्टि मापनी तथा महिलाओं के शैक्षिणक स्तर को आधार माना गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि शिक्षण तथा अन्य व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं की शैक्षिणक स्तर में साधर्क अन्तर पाया जाता है। परन्तु इन महिलाओं की अपने कार्य के प्रति संतुष्टि में सार्थक अन्तर नही है।

प्रस्तावना :–

आधुनिक संस्कृति व्यावसायिक संस्कृति है। आज इस संस्कृति का एक उल्लेखनीय परिवर्तन है, महिलाओं का घर की चार दीवारी से निकलकर बाहरी कामकाजी दुनिया की हलचल में सम्मिलित होना, उच्च मध्यम एवं निम्न वर्ग की शिक्षित महिलायें वर्तमान में बढ़ती हुई जनसंख्या में व्यवसायोन्मुखी एवं रोजगारोन्मुखी शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। इसके साथ ही शासकीय, अर्द्धशासकीय एवं अशासकीय कार्यालयों में सवैतनिक आधार पर कार्य कर रही है। व्यावसायिक क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भूमिका को देखकर भारतीय समाज मे वह जिस पृष्ठभूमि से आ रही है उसका क्या असर पड़ रहा है, इसका अध्ययन करना आवश्यक है। भारत के संदर्भ में देखे तो कामकाजी समाज के नजरिए में रेखांकित करने योग्य बदलाव आया है। जैसे–जैसे महिलाएं घरों से निकालकर कार्यस्थल तक पहुँच रही है वैसे–वैसे उनकी दिक्कते भी बढ़ रही है। कामकाजी महिलाओं को परिवार और पेशे के बीच सामंजस्य स्थापित करने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है क्योंकि समाज ने उनकी उपयोगिता और महत्व को तो स्वीकार कर लिया है लेकिन कामकाजी महिलाओं को जिस पारिवारिक सहारे की जरूरत होती है उससे आधी से ज्यादा कामकाजी महिलाएं आज भी महरूम है। उच्च वर्ग की महिलाओं की स्थिति शायद कुछ अलग हो, लेकिन मध्यम वर्ग की अधिकांश कामकाजी महिलाओं को आज भी कार्यालय के बाद घर के कामकाज में जुट जाना पड़ता है बात चाहे हम महानगरों की करें या छोटे कस्बों की कामकाजी महिलाएं आज भी घर में सबसे पहले उठती है और रात में सबसे बाद में उन्हें बिस्तर नसीब हो पाता है। वहीं महिलाओं के लिए आर्थिक स्वालम्बन आवश्यक है चाहे महिलाओं को आर्थिक आवश्यकता हो अथवा नहीं। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता से मानव गुणवत्ता में सुधार होगा, महिलाओं में आत्मबल, विश्वास एवं विचार उन्नत होंगे। हमें पुरूष अथवा महिला समाज का निर्माण नहीं करना है, बल्कि मानव प्रधान समाज की रचना करनी है, जिसमें लिंग के आधार पर कोई ऊँचा–नीचा नहीं हो। महिला एवं पुरुष का शारीरिक अंतर प्रकृति की देन है। प्रकृति की जरूरत है। महिला एवं पुरूष में इस भिन्नता के कारण महिलाओं के साथ पक्षपात पूर्ण व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए। हमारे समाज में अभी तक महिलाओं के कार्य को स्वीकृति प्रदान नहीं की गई है। वर्तमान में प्रश्न अधिकारों का नही, उनके सही उपयोग का है सरकार द्वारा राष्ट्रीय संसाधनों के उचित उपयोग, महिला प्रशिक्षण, नौकरियों के मध्य तालमेल, महिला रोजगार के क्षेत्रों एवं कार्यो के घण्टों में अनुकूल स्थितियों के निर्माण पर ध्यान दिया जाना, वर्तमान समय की एक अनिवार्य आवश्यकता है जैसे–शासकीय, अशासकीय अर्द्धशासकीय, स्वरोजगार इत्यादि क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ती गई है वैसे–वैसे व्यावसायिक कार्य संतुष्टि का महत्त्व बढ़ता गया है। व्यावसायिक संतुष्टि के अध्ययन द्वारा किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत एवं औद्योगिक कुशलता की गणना की जा सकती है।

वर्तमान समय में नारी शिक्षा के फलस्वरूप शिक्षित महिलाओं में शिक्षण के साथ–साथ चिकित्सा, नर्सिंग, पुलिस कानून, बैकिंग, शिक्षण इत्यादि व्यवसायों के प्रति अभिरूचि बढ़ी है। जिसके फलस्वरूप इन क्षेत्रों में महिला कर्मियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। परन्तु क्या वे अपने सामाजिक, पारिवारिक जीवन तथा व्यावसायिक अभिवृत्तियों, व्यावसायिक जीवन के बीच सामंजस्य स्थापित, कर पा रही है? अपने व्यवसाय क्षेत्र में कितनी संतुष्टि का अनुभव वो करती है। इसका अध्ययन आवश्यक है। उत्कृष्ट कार्य क्षमता और मानसिक स्वस्थता के लिए व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का भाव होना आवश्यक है।

प्रस्तुत अध्ययन में ऐसी परिस्थितियों में यह ज्ञात करने का शोधार्थिनी द्वारा प्रयास किया जायेगा कि सेवारत महिलाएं अपने व्यवसाय से संतुष्ट है या असंतुष्ट है।

समस्या कथन :–

''श्रीगंगानगर जिले में कार्यरत शिक्षित महिलाओं की अपने कार्य के प्रति संतुष्टि का विश्लेष्णात्मक अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य :–

१. कार्यरत् शिक्षित महिलाओं के शैक्षिक स्तर का अध्ययन करना प्रस्तावित शोध का उद्देश्य है।
२. शिक्षण एवं अन्य व्यवसायों से सम्बन्धित कार्यरत् शिक्षित महिलाओ की व्यावसायिक कार्य संतुश्टि का अध्ययन करना प्रस्तावित शोध का उद्देश्य है।

अध्ययन की परिकलपनाएँ :–

(अ) शिक्षण व अन्य व्यवसायों में कार्यरत शिक्षित महिलाओं के शैक्षिक स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(ब) शिक्षण एवं अन्य व्यवसायों से सम्बन्धित कार्यरत् शिक्षित महिलाओ की व्यावसायिक कार्य संतुश्टि के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन में जिला श्रीगंगानगर के शिक्षा एवं अन्य व्यवसायों में कार्यशील शिक्षित महिलाओं में से यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा ७०० महिलाओं को न्यादर्श के रूप में चयन किया जायेगा। इसमें जिले के शहरी व ग्रामीण, शासकीय और अशासकीय क्षेत्रों की नौकरीपेशा महिलाओं को चुना जायेगा।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :– व्यावसायिक कार्य संतोष मापनी– डॉ. अमर सिंह, डॉ. टी.आर.शर्मा

प्रदत्तों का विश्लेशण व विवेचन

(अ)शिक्षण व अन्य व्यवसायों में कार्यरत शिक्षित महिलाओं के शैक्षिक स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शिक्षण एवं अन्य व्यवसाय में कार्यरत शिक्षित महिलाओं के षैक्षिक स्तर का अध्ययन करने हेतु विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत ७०० महिलाओं सें उनके ष्शैक्षिक स्तर से सम्बन्धित आंकडों को एकत्रित किया गया। प्राप्त प्रदतों का सांख्यिकीय विश्लेशण करने के उद्देश्य से इन्हे सारणीबद्ध किया गया तत्पष्चात इनका प्रतिशत ज्ञात किया गया। प्राप्त आकडों को विश्लेशित करने से ज्ञात हुंआ कि विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के शैक्षिक स्तर में सार्थक अन्तर है। अत: हमारे द्वारा निर्मित परिकल्पना संख्या 'अ ' अमान्य है।

(ब) शिक्षण एवं अन्य व्यवसायों से सम्बन्धित कार्यरत् शिक्षित महिलाओ की व्यावसायिक कार्य संतुश्टि के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

शिक्षा तथा अन्य व्यवसाय क्षैत्र (चिकित्सा, पुलिस, विधिक क्षैत्र) में कार्यरत शिक्षित महिलाओं की व्यावसायिक संतुश्टि का अध्ययन करने के उद्देश्य से डॉ. अमर सिंह तथा डॉ. टी.आर. षर्मा द्वारा निर्मित कार्य संतुश्टि मापनी का प्रशासन चयनित ७०० कार्यशील शिक्षित महिलाओं पर किया गया। प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेशण करने के उद्देश्य से आवृत्ति वितरण सारिणी बनायी गई फिर मध्यमान तथा प्रमाणित विचलन की गणना की गई। विभिन्न व्यवसाय से

सम्बन्धित कार्यशील शिक्षित महिलाओं की व्यावसायिक कार्य संतुश्टि के मध्य सार्थक तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना भी की गई।

जिससे निश्कर्श रूप में यह ज्ञात हुआ कि विभिन्न व्यावसायों में कार्यरत महिलाओं की व्यवसायिक संतुश्टि में आंशिक अन्तर है। जो सार्थकता स्तर पर मान्य नही है। अत: हमारे द्वारा निर्मित परिकल्पना स्वीकृत होती है जो शिक्षण व अन्य व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं की व्यवसायिक कार्य संतुश्टि में सार्थक अन्तर नही है को परिलक्षित करती है।

उपयोगिता –

१. कार्यरत महिलायें अपने कार्य तथा व्यवसाय के प्रति पूर्णत: समर्पित हो पाएंगी।
२. अपने निर्णयों व अधिकारों को पहचानेगी।
३. कार्यरत महिलाओं के अनुसार पारिवारिक व शैक्षिक परिस्थितियों के निर्माण में भी प्रस्तुत शोध सहायता प्रदान करेगा।
४. कार्यरत महिलाओं का दोहरा कार्यभार को सरल बनाने में भी प्रस्तुत शोध सहायक होगा।
५. महिलाओं को तनाव मुक्त रखने में भी प्रस्तुत शोध सहायक है।

भावी शोध हेतु सुझाव –

१. विभिन्न व्यवसाय क्षेत्र में कार्यशील महिलाओं एवं कार्यशील पुरूषों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
२. विभिन्न आयु स्तर की कार्यशील महिलाओं पर उनकी व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
३. शैक्षिक क्षेत्र में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों में अपने व्यवसाय के प्रति व्यावसायिक कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
४. महाविद्यालयीस्तरपर कार्यशील महिला शिक्षिकाओं में व्यावसायिक संतुष्टि का मापन।

सन्दर्भ सूची

१. अग्रवाल, जे.सी. (१९८८) : 'भारत में नारी शिक्षा', विधा विहार, दरियागंज, नई दिल्ली।
२. अग्रवाल, जे.सी. (२००९) : 'भारत में नारी शिक्षा', विधा विहार, दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२
३ अर्थववेद, : २.३६.१, १.११७.२३
४ अल्तेकर, ए.एस. (१९५६) : 'वूमन इन हिंन्दू सिविलाईजेसन', बनारसी दास पब्लिकेशन्स कम्पनी, बनारस (उ.प्र.)
५ अल्तेकर, ए.एस.,(१९६२) : 'द पोजीशन ऑफ वूमन इन हिंदू सिविलाईजेसन',मोतीलाल पब्लिकेशन्स, वाराणासी (उ.प्र.)

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com